ध्यान इधर-उधर होने लगेगा तो मैं उस रस को नहीं ले पाऊंगा। अगर उस रस को नहीं ले पाऊंगा तो इस छत्ते में कभी आनंद रूपी शहद इकट्ठा नहीं हो पाएगा। आपका भी जीवन है। आप भी बहुत कुछ करते हैं और सोचते हैं कि आप जो करते हैं, वह दूसरा नहीं करता है। जो आप हैं, वह दूसरा नहीं है। आपका नाम भी तो अलग है, चेहरा भी अलग है।परंतु आप जैसे भी हैं, एक तरीके से इस संसार के अंदर आपके जैसा कोई नहीं है। वास्तव में स्त्रातजिक व समरतंत्र का मूल मंतव्य शक्ति व शान्ति पर अवलंबित होने के साथ ही वैश्विक परिदृष्य में समस्त नीतियां, योजनाओं-परियोजनाओं का मूलाधार शक्ति व शान्ति ही है। शक्ति व शान्ति अनन्तकालीक है। शक्ति के महत्व को स्पष्ट करते हुए महामौर्य आचार्य कौटिल्य ने स्पष्ट किया था कि - शक्तिशाली राजा के मित्र तो मित्र बने ही रहते हैं उसके शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। युद्ध का अंतिम पर्णित शक्ति ही है। जिससे शान्ति को अलंकृत किया जाता है। अतएव निष्ठापूर्वक अपने अन्तर्मन से ईष्या, द्वेष, धृणा, वाद-विवाद, संघर्ष-युद्ध को समाप्त कर शक्ति व शान्ति का एक अटूट स्तम्भ स्थापित करने हेतु संकल्पित हो।

**********

संदर्भ ग्रन्थ-

1.रावत प्रेम जी- हृदय की अभिलाषा
2.डॉ. शर्मा दुर्गेश - सॉफ्टवेयर इंजीनियर, अमर उजाला, फरवरी 2022
3.अर्थशास्त्र - आचार्य कौटिल्य
4.सूचना प्रद्योगिकी- योजना 2021
5.दैनिक जागरण - अप्रैल 2022
6.अमृत्व विचार - संगणक लाल अमृत
7.स्वविचार

# हिन्दी पत्रकारिता के बदलते स्वरूप

**कनक राज पाठक**
शोधार्थी
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड Mo.9570002575

**बीज शब्द -** हिन्दी पत्रकारिता, हिन्दी मुद्रण, पत्रकारिता-मनोरंजन, पत्रकारिता का लक्ष्य

**प्रस्तावना:-**भारत में पत्रकारिता का श्रेय महर्षि नारद मुनि को जाता है। देवत्वकाल में नारद मुनि ने धरती लोक, पाताल और स्वर्ग लोक के बीच संवाद स्थापित किया। नारद मुनि समूचे विश्व का समाचार देवतागणों को सुनाया करते थे। इसके बाद महाभारतकालीन संवाद स्थापित किया संजय ने। महाभारत की लड़ाई का आंखों देखा हाल धृतराष्ट्र को संजय ही सुनाया करते थे। इसके बाद राजाओं और महाराजाओं के काल में शिलालेख, भोज पत्रों पर लेख, मुनादी सहित अन्य जनमाध्यमों से लोगों के बीच सूचनाओं का प्रसार किया जाता था। वैश्विक मानकों के बराबर भारत में हिन्दी पत्रकारिता का श्रीगणेश उदंत मार्तंड से माना जाता है। यह साप्ताहिक प्रकाशन था और विशुद्ध हिन्दी में इसका प्रकाशन पंडित जुगल किशोर शुक्ल करते थे। भारत में पत्रकारिता के उद्भव काल में अखबारों, पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य था ब्रितानी हुकूमत के खिलाफ जनमत तैयार करना। अकबर इलाहाबादी ने यहां तक कहा है कि "खींचो न कमानों को न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो"। राष्ट्रीय नवीन मेल के पत्रकार वेद प्रकाश वाजपेयी जी ने कहा था कि "सूरज निकले या न निकले लेकिन अखबार को निकलना होगा"।

**उद्देश्य:-**"वर्तमान परिदृश्य में हिंदी और पत्रकारिता" विषय का मुख्य उद्देश्य है हिन्दी पत्रकारिता के भूत, वर्तमान और भविष्य की जानकारी हासिल करना। हिन्दी पत्रकारिता का प्रादुर्भाव किन उद्देश्यों और मिशन के साथ हुआ और यह कैसे विकसित हुआ और भविष्य में इसकी क्या क्या संभावनाएं हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में इन्हीं बातों का उल्लेख किया गया है।

**"वर्तमान परिदृश्य में हिंदी और पत्रकारिता"**

सन 1826 से लेकर 1884 तक का समय हिंदी पत्रकारिता का उद्भव काल है। साल 1826 में 30 मई को पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत की थी। कलकत्ता से उदन्त मार्तंड नामक समाचार पत्र निकाल कर भारत में हिंदी पत्रकारिता का श्रीगणेश किया। जिसमें उदंत का अर्थ समाचार होता है, जबकि मार्तंड का अर्थ सूर्य है। सूर्य की किरणों की तरह ही इस समाचार पत्र ने अपने विचारों को भारतीय जनमानस तक पहुंचाया है। उदंत मार्तंड हिन्दी और हिन्दवासियों का सच्चा हितैषी था। हिन्दुस्तानियों के हित के लिए यह अखबार सबसे पहले चलाया गया। इसके संपादक जुगल किशोर ने लिखा था "हिन्दी भाषा अपनी निज भाषा में समाचार पढ़कर उसका आनंद लें और इसके महत्व को समझें" यही जुगल जी की हार्दिक कामना और पत्र प्रकाशन का सर्वोच्च लक्ष्य भी था। उल्लेखनीय है कि उतंद मार्तंड भारतवर्ष में हिन्दी का पहला साप्ताहिक समाचार पत्र था। हालांकि यह समाचार पत्र डेढ़ वर्ष तक ही चल पाया। भारत में पत्रकारिता का उदभव काल निष्पक्षता और राष्ट्रवाद से ओतप्रोत था। उदाहरण के तौर पर हम भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को गति देने में अखबारों का प्रयोग, जनजागरण और क्रांतिकारी घटनाओं में देख सकते हैं। ब्रितानी हुकूमत के द्वारा भारतीयों की अभिव्यक्ति की आजादी पर तमाम प्रतिबंध लगाने के बावजूद शंखनाद, रणभेरी,

हिंदोस्थान, हरिश्चंद्र मैगजीन, बाल बोधिनी, हिंदी प्रदीप, सरस्वती, प्रताप जैसे राष्ट्रवादी समाचार पत्र निकलते रहे और जन जन की आवाज बनते रहे। आर्थिक, शारीरिक, दण्डात्मतक कार्रवाइयों के बाद भी उस समय के निर्भीक पत्रकारों ने राष्ट्रवाद, देशभक्ति और क्रांति के स्वर से सम्पकृत कर राष्ट्र के नव निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। लाख कठिनाइयों के बाद भी ऐसे देशभक्त पत्रकारों ने आज़ादी के जन जागरण रास्ता नहीं छोड़ा और माँ भारती की सेवा के लिए अपने प्राणों तक की आहुति दे दी।भारत में स्वतंत्रता के बाद हिन्दी पत्रकारिता में महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सन् 1971 तक हमारे देश में अंग्रेजी समाचार पत्रों का वर्चस्व था, लेकिन इसके अलगे वर्ष हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी गति इतनी तीव्र कर ली कि अंग्रेजी के सभी समाचार पत्रों की प्रसार संख्या से आगे निकल कर हिन्दी समाचार पत्रों ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया। वर्तमान में स्थिति यह है कि सभी भारतीय भाषाओं से आगे निकल कर हिन्दी समाचार पत्रों ने सभी समाचार पत्रों से आगे निकल गए। इस समय देश का ऐसा कोई भी प्रदेश नहीं है जहां से हिन्दी के समाचार पत्र और पत्रिकाएं नहीं निकलती हों।

सन् 1974 में भारत में सर्वाधिक समाचार पत्र और पत्रिकाएं हिन्दी में ही छपते थे। हिन्दी में जहां 3200 समाचार पत्र और पत्रिकाएं छपती थी वहीं अंग्रेजी की संख्या 2453 थी। वर्ष 1971 में प्रेस रजिस्ट्रार की रिपोर्ट के अनुसार विगत दो वर्षों में हिन्दी के पत्रों की बिक्री लगभग दो लाख से अधिक बढ़ी। सन् 1971 में हिन्दी के 422, अंग्रेजी 143 और उर्दू के 107 समाचार पत्र छपते थे। प्रेस इन इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2005-06 में अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी के समाचार पत्रों ने बढ़त बनाए रखा। हिन्दी में 4131 समाचार पत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है जबकि अंग्रेजी में 864, बांग्ला में 445, गुजराती 775, उर्दू में 463 और मराठी में 328 समाचार पत्रों का प्रकाशन हो रहा है।

भारतीय भाषाओं में सबसे पहले तमिल भाषा के टाइप बनाए गए। नागरी लिपि के टाइप सबसे पहले यूरोप में बने। भारत में सबसे पहले 1778 ई. में पहली बार बांग्ला भाषा का व्याकरण छपा। उसके बाद सन 1779 देवनागरी लिपि में सबसे पहली पुस्तक छपी हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण, इसे गिलक्राइस्ट ने छपवाया था। 195 साल पूर्व हिंदी पत्रकारिता के सफर पर नजर डाला जाए तो समाज और राष्ट्र में बदलाव के साथ-साथ पत्रकारिता ने ही अपने तेवर और कलेवर बदले हैं। आज हिंदी अखबारों को उद्योग का दर्जा प्राप्त है, जिसमे लाखों पत्रकार रोजगार पा रहे हैं। पत्रकारिता इतना मुखर हुई है कि आमजनों की आवाज बन कर उभरी है। शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए लोग आज भी मीडिया का ही सहारा लेते हैं। जवाबदेह पत्रकारिता लोकतांत्रिक समाज की मजबूती के लिए आवश्यक है।

**हिंदी पत्रकारिता का प्रिंट से मोबाइल तक का सफर:-** हिंदी पत्रकारिता का सफर कागजी दुनिया से होते हुए आकाशवाणी और फिर टेलीविजन के दौर तक पहुंचा। सुनने और देखने जैसी सुविधाओं के कारण समाचार और मनोरंजन का माध्यम अशिक्षित और कम पढ़े लिखे लोगों तक अपनी जगह बनाने में कामयाब हुआ। कम मेहनत में आमलोगों तक अपनी बात पहुंचाने में सफल हुआ है। टीवी और रेडियो के बाद अब मोबाइल ने यह स्थान ले लिया है। शुरुआती दौर में मोबाइल सिर्फ अपने परिजनों के कुशल क्षेम जानने और सम्पर्क के तौर पर कार्य करता था लेकिन मोबाइल में इंटरनेट,कैमरा, वीडियो कैमरा और अन्य की सुविधाएं आ जाने से अब यह सिर्फ सम्पर्क का माध्यम न रहकर पूरी दुनिया से अपडेट रहने का माध्यम बन गया है। कम्प्यूटर और मोबाइल में हिंदी टाइपिंग की सुविधा आ जाने से हिंदी के लेखकों, पाठकों को और भी सुविधा मिल गई है, विशेषकर तब जब मोबाइल में हिंदी यूनिकोड टाइपिंग की सुविधा मिली। आज जिसकी जेब में मोबाइल है वही खबरची की भूमिका अदा करने लगा है। सूचना प्रोद्योगिकी के इस युग में अपने आस पास होने वाली घटनाओं को सोशल मीडिया के जरिये वायरल कर दुनिया के किसी भी कोने में आंखों देखा हाल पहुंचा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हिंदी पत्रकारिता का भविष्यवाणी करना बेहद कठिन है। तकनीक इसी तेजी के साथ बढ़ता गया तो वह दिन दूर नहीं कि पढा जाने वाला अखबार टेलीग्राम की तरह इतिहास न बन जाये। वैसे भी अखबार ई पेपर के रूप में कम्प्यूटर, लैपटॉप और मोबाइल पर आ ही गए हैं। भारत जैसे बहुभाषा भासी देश में विदेशों से आई कंप्यूटर के प्रयोग एवं सीखने के तौर तरीकों में इस्तेमाल अंग्रेजी भाषा ने हम भारतीयों को शुरुआती दौर में आतंकित किया था पर भारतीय वैज्ञानिकों और यहां की भाषायी शक्तियों ने इस समस्या से जल्द ही निजात दिला दी। परिणामस्वरूप भारत के युवा मस्तिष्क ने इसका उत्तर भाषा प्रोद्यौगिकी से दिया। अनेक भाषाओं, उपभाषाओं एवं बोलियों से समृद्ध भारत के युवा वैज्ञानिकों ने कंप्यूटर को ही यहां की भाषा से समृद्ध कर दिया। हिन्दी अब चुटकुले कहानियां कविता या पारंपरिक गद्य-पद्य की विधाओं की भाषा मात्र न रहकर अब सूचना प्रोद्यौगिकी के तमाम आयामों, दिशाओं और क्षेत्रों तक जुड़ गई है। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत चंहुमुखी मार्ग प्रशस्त किए हैं। समाचार पत्र, पत्रिकाओं, पोस्टर, बैनर, हैडंबिल, पंपलेट, विजटिंग कार्ड, दीवार लेखन, विवाह कार्ड, पुस्तक लेखन, निमंत्रण, अभिवादन पत्र, सामग्रियों की पैकिंग पर मुद्रण, स्टीकर लेखन, नाम पट्टिकाएं, विभिन्न सामग्रियों पर मुद्रण, वस्त्रों पर मुद्रण, विद्युतीय बोर्डों पर लेखन, विभागों -संस्थानों के नामोल्लेख करने वाले बोर्ड, दिशासूचक बोर्ड, सूचना देने वाले विभिन्न बोर्ड, शोध प्रबंध, टंकण मुद्रण सहित अनेक मुद्रण माध्यमों में हिन्दी अपना वर्चस्व स्थापित कर चुकी है। इसका श्रेय सूचना प्रोद्यौगिकी को ही जाता है। सूचना और संचार के बढ़ते महत्व ने चेतना को जागृत करने का काम किया है। इस क्रांति ने जन जन को अद्यतन करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। रेडियो, दूरदर्शन, केबल, कंप्यूटर, इंटरनेट, फैक्स, सेल्युलर, पेजर, इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर, सिनेमा, दूरभाष तथा अन्य विद्युत माध्यमों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान की है।आईआरएस के 2017 के सर्वेक्षण के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर रपट में कहा गया है कि प्रिन्ट उद्योग बढ़ रहा है। आरएनआई की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में पंजीकृत प्रकाशनों की संख्या 1,14,820 है। किसी भी भारतीय भाषा में पंजीकृत समाचार पत्र-पत्रिकाओं की सबसे अधिक संख्या हिंदी भाषा में है और यह संख्या 46,827 है, जबकि हिंदी के अलावा दूसरे नंबर पर आने वाली अंग्रेजी भाषा में प्रकाशनों की संख्या 14,365 है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (MIB) द्वारा चैनलों को लाइसेंस जारी करने की स्टेटस रिपोर्ट जारी की गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार, 31 अक्टूबर 2017 से अब तक मंत्रालय द्वारा जारी किए जाने वाले लाइसेंसों की संख्या में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, 31 दिसंबर तक देशभर में मंत्रालय द्वारा स्वीकृत निजी टीवी चैनलों की संख्या 877 है। नवंबर और दिसंबर 2017 में कोई नया लाइसेंस जारी नहीं किया गया है।सरकार द्वारा वर्ष 2017 में 45 लाइसेंस जारी किए गए थे, जबकि उससे पूर्व के वर्ष में जारी किए जाने वाले चैनलों की संख्या 75 थी। यदि कुल चैनलों की बात करें तो 1099 चैनलों को अनुमति दी गई, जबकि 222 चैनलों का लाइसेंस रद किया गया था, इनमें 66 तो अकेले वर्ष 2017 में ही शामिल थे।

इनमें 44.4 प्रतिशत यानी 389 चैनल 'न्यूज और करेंट अफेयर्स' कैटेगरी में जबकि 488 चैनल 'नॉन न्यूज। इंडियन रीडरशिप सर्वे (आईआरएस) की रिपोर्ट जारी कर दी गई है। इसके अनुसार, दैनिक जागरण सात करोड़ 36 लाख 73 हजार पाठक संख्या के साथ पहले स्थान पर है, दैनिक भास्कर 5.14 करोड़ पाठकों के साथ दूसरे स्थान पर है, अमर उजाला पाठक संख्या 4.76 करोड़ के साथ तीसरे स्थान पर है। 'हिन्दुस्तान' और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के आंकड़े जारी नहीं किए गए हैं क्योंकि अभी इनकी समीक्षा की जा रही है। कुछ हफ्तों बाद हिंदुस्तान समूह के आंकड़े जारी होने पर रैंकिंग में बदलाव आने के आसार हैं। इसमें शीर्ष 10 अखबारों की सूची में अंग्रेजी का केवल एक अखबार 'टाइम्स ऑफ इंडिया' है। यह अंग्रेजी अखबार एक करोड 52 लाख 36 हजार की पाठक संख्या के साथ नौवें स्थान पर है। टीवी निगरानी एजेंसी BARC (ब्रॉडकास्ट ऑडियंस रिसर्च काउंसिल) इंडिया के नवीनतम अनुमानों के अनुसार, भारत में लगभग 210 मिलियन घरों में अब एक टीवी सेट है, जो 2018 में 197 मिलियन से 6.9% अधिक है। टीवी दर्शकों की संख्या भी 6.7% बढ़ी, जो 2018 में 836 मिलियन से 892 मिलियन तक पहुंच गई। समाचार फॉर मीडिया डॉट कॉम के मुताबिक भारत में सबसे ज्यादा करीब 52 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं, इसके बाद 9.7 करोड़ लोग बंगाली, दो लाख साठ हजार लोगों ने अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा बताया है।

**सारांश:-**कहा जाता था कि ब्रितानी हुकूमत का सूर्यास्त नहीं होता है, लेकिन भारत के क्रांतिवीरों, युवाओं, महिलाओं और जन-जन ने मिलकर ब्रितानी हुकूमत को सात समुंदर पार खदेड़ दिया। इसका श्रेय पत्रकारिता को भी जाता है। खास कर हिन्दी पत्रकारिता जिसकी पहुंच गांव, ग्रामीण और शहरी सभी लोगों तक थी, स्वतंत्रता की चिंगारी को सभी तक पहुंचाया। इसी मिशन की पूर्ति के लिए भारत में पत्रकारिता की शुरुआत हुई थी। गणेश शंकर विद्यार्थी ने प्रताप, प्रेमचंद ने हंस, महात्मा गांधी ने नवयुग, हरिजन जैसे समाचार पत्रों का संपादन कर स्वतंत्रता की लौ हर भारतीयों के दिल में जगा दी। सैकड़ों समाचार पत्र ब्रितानी हुकूमत का नाकों दम कर दिया। अंततः 15 अगस्त 1947 को हमें आजादी मिली। इसके बाद भी हिन्दी पत्रकारिता ने अपना काम अनवरत जारी रखा। आजादी के बाद सभी समाचार पत्रों की प्रसार संख्या से आगे निकल कर हिन्दी समाचार पत्रों ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया। वर्तमान में स्थिति यह है कि सभी भारतीय भाषाओं से आगे निकल कर हिन्दी समाचार पत्रों ने सभी समाचार पत्रों से आगे निकल गए। इस समय देश का ऐसा कोई भी प्रदेश नहीं है जहां से हिन्दी के समाचार पत्र और पत्रिकाएं नहीं निकलती हों। भारत में सबसे ज्यादा करीब 52 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं, इसके बाद 9.7 करोड़ लोग बंगाली, दो लाख साठ हजार लोगों ने अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा बताया है। भारत के युवा मस्तिष्क ने इसका उत्तर भाषा प्रोद्यौगिकी से दिया। अनेक भाषाओं, उपभाषाओं एवं बोलियों से समृद्ध भारत के युवा वैज्ञानिकों ने कंप्यूटर को ही यहां की भाषा से समृद्ध कर दिया।

हिन्दी अब चुटकुले कहानियां कविता या पारंपरिक गद्य-पद्य की विधाओं की भाषा मात्र न रहकर अब सूचना प्रोद्यौगिकी के तमाम आयामों, दिशाओं और क्षेत्रों तक जुड़ गई है। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत चंहुमुखी मार्ग प्रशस्त किए हैं। समाचार पत्र, पत्रिकाओं, पोस्टर, बैनर, हैडंबिल, पंपलेट, विजटिंग कार्ड, दीवार लेखन, विवाह कार्ड, पुस्तक लेखन, निमंत्रण, अभिवादन पत्र, सामग्रियों की पैकिंग पर मुद्रण, स्टीकर लेखन, नाम पट्टिकाएं, विभिन्न सामग्रियों पर मुद्रण, वस्त्रों पर मुद्रण, विद्युतीय बोर्डों पर लेखन, विभागों-संस्थानों के नामोल्लेख करने वाले बोर्ड, दिशासूचक बोर्ड, सूचना देने वाले विभिन्न बोर्ड, शोध प्रबंध, टंकण मुद्रण सहित अनेक मुद्रण माध्यमों में हिन्दी अपना वर्चस्व स्थापित कर चुकी है।

1. **********

**संदर्भ:-**

1.मीडिया का विकास, नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी प्रोफेसर अर्जुन तिवारी, पृष्ठ संख्या 93, 115,
2.सत्याग्रह वेब पोर्टल https://www.satyagrah.com/
3.समाचार फॉर मीडिया डॉट कॉम हिंदी पत्रकारिता दिवस: 4.चुनौतियों से चुनौतियों तक का सफर https://www.samachar4media.com/vicharmanch-news/an-article-on-hindi-journalism-day-written-by-senior-journalist-rajesh-badal-55614.html
5.सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की वेबसाइट
6.आरएनआई की वेबसाइट
7.इंडियन रीडरशिप सर्वे